International Journal of Arts & Education Research

गिजुभाई के शैक्षिक विचारों की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उपादेयता

DR. Sudha Sharma
Aissistant Professor
IIMT University , Meerut

शोध सार–
वर्तमान पेपर के अन्तर्गत उनके शैक्षिक विचारों की आधुनिक बाल शिक्षा में उपादेयता की चर्चा की गई है। परिवर्तित शैक्षिक परिदृश्य में बाल शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा की नींव माना जाता है। जबकि अब तक प्राथमिक शिक्षा को शिक्षा की नींव कहा जाता था। श्री गिजु भाई ने इसी नींव की मजबूती के लिए शैक्षिक विचार दिये थे। इनके शैक्षिक विचार आज की भारतीय परिस्थिति के लिए कितने उपयोगी हैं अग्रिम पंक्तियों में इसी की चर्चा की गई है।

प्रस्तावना–
शिक्षा और समाज में घनिष्ट सम्बन्ध होता है। दोनों एक दूसरे के पूरक होते हैं। शिक्षा के बिना समाज का अस्तित्व सम्भव नहीं तथा समाज के बिना शिक्षा की कल्पना भी नहीं की जा सकती। समाज अपने रीति–रिवाज, अपनी उपलब्धियों को अपनी भावी पीढ़ी तक पहुँचाने हेतु अपने बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था करता है। इसके बदले शिक्षा समाज के रीति–रिवाज को बनाए रखने, समाज की कमियों को दूर करने तथा उसकी उपलब्धियों को नई पीढ़ी में स्थान्तरित करने का कार्य करती है। समाज का स्वरूप गत्यात्मक होता है जिससे उसमें निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। अतः शिक्षा भी गत्यात्मक होती है। समाज में छोटा परिवर्तन भी शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि में परिवर्तन ला देता है। इसी सामाजिक परिवर्तन के सन्दर्भ में गिजु भाई के शैक्षिक विचारों की वर्तमान समय में उपादेयता की यहाँ विवेचना की गई है। गिजु भाई के शैक्षिक विचार जो उन्होंने बीसवीं शती के प्रारम्भिक वर्षों में दिये थे आज 21वीं शती में कहाँ तक उपयोगी हो सकते हैं क्योंकि आज भारतीय समाज तब की तुलना में काफी बदल चुका है।

श्री गिजु भाई के शैक्षिक विचारों के विवेचन के आधार पर स्पष्ट होता है कि उन्होंने शिक्षा और बालक के जीवन की गुणात्मकता को एक दूसरे का पर्याय माना है। श्री गिजु भाई एक श्रेष्ठ शिक्षक ही नहीं वरन् एक बाल पारखी भी थे। उनके शिक्षा सम्बन्धी विचार बहुत ही क्रान्तिकारी थे। वे मानते थे कि सच्ची शिक्षा वही है जो बालकों के सच्चे स्वरूप को पहचानने में मदद करें। श्री गिजु भाई के शब्दों में, ''बालक के अन्तर्निहित विकास में आने वाले अवरोधों को दूर कर, बालक का सर्वांगीण विकास करना ही शिक्षा है।'' उनके शिक्षा दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचारों को बाल शिक्षा दर्शन की संज्ञा दी जा सकती है। ''गिजु भाई के शैक्षिक विचारों में बाल शिक्षण की जो नयी दिशा उद्घाटित हुई है वह आधुनिक शिक्षा जगत की समस्याओं को दूर करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।'' (यादव एवं सक्सैना, 2004)

वर्तमान समय में हमारे देश में बच्चों की एक बड़ी संख्या शिक्षा प्राप्त करने वाली प्रथम पीढ़ी की श्रेणी में आती है। परिवार में समृद्ध एवं उपयुक्त शैक्षिक वातावरण न होने से बच्चों को समुचित देख–रेख और मार्गदर्शन मिल पाना सम्भव नहीं होता, बल्कि बहुत–सी गलत बातों को सीख लेने की सम्भावना भी रहती है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा में स्वच्छता और स्वस्थ आदतों के विकास पर बहुत अधिक बल दिया जाता है, क्योंकि 4–6 वर्ष की अवस्था सबसे अधिक संवेदनशील होती है अतः इस समय सीखी हुई आदतें प्रायः स्थायी होती हैं। स्वच्छता और स्वस्थ आदतें इस आयु में अच्छी प्रकार से सिखाई जा सकती हैं।

इसीलिए प्राथमिक शिक्षा से पहले पूर्व प्राथमिक शिक्षा जरूरी है। गांधी जी ने भारत के हर बच्चे के लिए अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का सपना देखा था तथा स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान ''बुनियादी शिक्षा का दर्शन'' स्थापित कर इस दिशा में कार्य आरम्भ किया था। इसी समय गिजु भाई ने बालकों से प्रेरित हो बाल शिक्षा दर्शन का निरूपण किया। उन्होंने गांधी जी से प्रेरित हो स्वतन्त्रता संग्राम शिविरों में अक्षर ज्ञान योजना प्रारम्भ की, सूरत में वरना परिषद का गठन किया और पूर्व प्राथमिक शिक्षा (बाल शिक्षा) के सपने को साकार किया और बाल मन्दिर में अपनाकर इस शिक्षा को मूर्त रूप प्रदान किया।

आज स्वतन्त्रता प्राप्ति के 61 वर्ष बाद भी प्राथमिक शिक्षा में कहीं गतिशीलता दिखाई नहीं दे रही है। इक्कीसवीं सदी के आरम्भ से ही भारत सरकार शिक्षा को मौलिक अधिकार के रूप में स्वीकार कर सबके लिए शिक्षा की अनिवार्यता पर बल दे रही है किन्तु अभी भी हमारी जनसंख्या का अधिकांश भाग निरक्षर है। शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत स्वयंसेवी संस्थाओं की मात्रात्मक भागीदारी तो खूब रही किन्तु उनका समाज को गुणात्मक लाभ तथा सामाजिक जागरण नहीं के बराबर मिल रहा है दूसरी ओर निजी क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षण संस्थाओं ने शिक्षा का पूरी तरह व्यवसायीकरण कर दिया है। अंग्रेजी प्रभाव के कारण शिक्षा देशज जड़ों से कटती जा रही है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली संक्रमण के दौर से गुजर रही है। शिक्षा का उद्देश्य मात्र, परीक्षा पास करना रह गया है। छात्रों में तर्क, विश्लेषण, सृजनशीलता आदि गुणों का कोई स्थान नहीं रह गया है। सूचना को ज्ञान का पर्याय माना जाने लगा है जिसके कारण सूचनात्मक ज्ञान में वृद्धि हो रही है। लेकिन राष्ट्रीय चरित्र एवं नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। बालकों में समस्या समाधान व आलोचनात्मक चिन्तन का विकास नहीं हो रहा है। सम्पूर्ण शैक्षिक वातावरण अति औपचारिक और अतिकृत्रिम परिलक्षित हो रहा है। विद्यालय की संख्यात्मक वृद्धि को ही गुणात्मक शिक्षा का पर्याय माना जा रहा है।

शिक्षा की ऐसी विषमता जहां पब्लिक स्कूल में एक तरफ बच्चे पर बस्ते का बोझ है और इन विद्यालयों की पांच सितारा संस्कृति के द्वारा बालक को अहंकारी, स्वार्थी बनाया जा रहा है और उसे मासूमियत से दूर किया जा रहा है वहीं दूसरी तरफ बच्चे के पास बस्ता ही नहीं है और वे बालक भी धनाभाव के कारण भारत की वर्तमान संस्कृति से दूर है। इन विरोधी परिस्थितियों में जब शिक्षक समुदाय कुंठित होता जा रहा है नये शैक्षिक प्रयत्नों की सख्त आवश्यकता है। बदलती परिस्थितियों के अनुरूप पाठ्यक्रम को नया

आकार देकर शिक्षण पद्धतियों का नवीनीकरण करना है। शिक्षकों, शिक्षाविदों, शोधार्थियों और हर जागरूक व्यक्ति को शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे नये प्रयोगों से अवगत कराना है तथा शिक्षा के व्यापक प्रसार के लिए नवाचारों का प्रश्रय देना है। इस संदर्भ में गांधीवादी शिक्षाशास्त्री गिजु भाई का ''बाल शिक्षा दर्शन'' एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जिन्होंने अपना पूरा जीवन शिक्षा के प्रसार तथा बाल शिक्षा के क्षेत्र में नये–नये प्रयोगों के लिए समर्पित कर दिया था।

गिजु भाई ढाई वर्ष के बालक को पढ़ाने का बीड़ा उठाने वाले तथा उनके साथ जबरदस्ती करने व उन पर किताबों का बोझ लादने के पक्ष में नहीं थे। उनके विचार में बालक को जबरदस्ती कुछ भी नहीं सिखाया जा सकता। उसे स्वयं जानना और विकसित होना है। वह बालकों को कहानी सुनाकर एवं खेल पद्धति द्वारा शिक्षा प्रदान करते थे। अपने बाल मन्दिर में उन्होंने बालकों के प्रत्येक क्रियाकलाप व संवेगों का गहन अध्ययन करके उसी के अनुरूप बाल साहित्य का सृजन किया। उनके अनुसार बालक समूह में काम करने वाले लोगों के गीतों को सुनकर शीघ्र याद कर लेते हैं। उनकी स्मरण शक्ति तीव्र होती है। अतः गीतों के माध्यम से ही अच्छे संस्कार देते थे। गिजु भाई के बाल मन्दिर में बालक स्वयं विद्यालय आने के लिए प्रेरित होता है उन्होंने अपने बाल दर्शन के माध्यम से यह सिद्ध कर दिया कि बालक में पवित्रता, निश्छलता, संवेदनशीलता कहीं भी किसी से कम नहीं है। बालक के साथ आदर का व्यवहार वांछनीय है क्योंकि उसके व्यक्तित्व का आदर करके ही हम कल के राष्ट्र निर्माता का निर्माण कर सकते हैं। जिस प्रकार एक किसान अपने खेत की मिट्टी का स्वभाव पहचान कर उससे अच्छी फसल प्राप्त कर लेता है उसी प्रकार एक शिक्षक बालक की रूचि, क्षमता और योग्यता को जानकर उसे अच्छी शिक्षा दे सकता है और उससे वांछित कार्य करवा सकता है।

उन्होंने बाल जीवन, सामाजिक जीवन और मानव जीवन को एक नये नजरिये से देखना शुरू किया उनके विचार से सुन्दर और खुशहाल राष्ट्र की कल्पना बाल सम्मान के महत्व द्वारा ही सम्भव है। आज समाज में जो युवा अनुशासनहीनता दिखाई पड़ रही है वह बचपन में अभिभावकों, शिक्षकों द्वारा बालकों के प्रति उपेक्षाभाव रखना है। यदि बालक को प्रारम्भ से ही आदर, सम्मान, निर्भय वातावरण, सृजनशीलता आवश्यक सामग्री उपलब्ध करायी जाए तो बालक में आनन्द, सहयोग व संतोष के गुण का विकास होगा जिससे वह हिंसात्मक वृत्ति से दूर रहेगा। गिजु भाई ने बाल शिक्षा के क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान दिया है। उनके द्वारा दिए गए प्रयोगों को अपनाकर वर्तमान शिक्षा प्रणाली विशेषतः पूर्व प्राथमिक शिक्षा ढाई से छः वर्ष में सुधार सम्भव है। आज पूर्व प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक सुधार लाने और बाल शिक्षा को एक नई दिशा देने में उनका बाल दर्शन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उनके अनुसार बच्चा बीज रूप में पूर्ण है। केवल शरीर से कमजोर होने के कारण वह असहाय है। इस कारण माता–पिता या शिक्षक उसे जब चाहे जिस रूप में गढ़ दें, असम्भव है। उनका मत है कि शिक्षक प्रशिक्षक या काम लेने वाला नहीं है, बल्कि वह एक पुजारी है जिसे बाल मन्दिर में बालक की पूजा करनी है। उसका काम बालक के विकास में सहयोग देना है। उसे काम थोपना नहीं।

सार रूप में श्री गिजु भाई का बालदर्शन बालक के सर्वांगीण विकास की ओर इंगित करता है जिसके लिए पूर्व में चल रही शिक्षा व्यवस्था में कुछ आमूल–चूल परिवर्तन करने होंगे, क्योंकि वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी युग में बालक पुरानी शिक्षा व्यवस्था में वैश्वीकरण के सम्प्रत्यय को प्राप्त नहीं कर सकता है और चल रही पुरानी व्यवस्था में ''बालक को एक नये युग में प्रवेश'' जैसी धारणा को ध्यान में रखकर उसके पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों, मूल्यांकन व्यवस्था तथा उसको प्रदान किए जाने वाले अनुभवों को एक नया स्वरूप प्रदान कर सकता है जिससे आने वाली भविष्यगामी समस्याओं का वह समाधान कर सकते हैं। गिजु भाई का बालदर्शन आज भी उतना ही महत्वपूर्ण प्रतीत होता है जितना कि उस समय रहा होगा।

शिक्षाशास्त्रियों तथा मनोवैज्ञानिकों ने इस बात की पुष्टि भी की है कि 0–6 वर्ष की आयु में बच्चों के विकास की गति तीव्र होती है तथा यही आयु संस्कारों के निर्माण के लिए सबसे उपयुक्त होती है यदि बालक के सर्वांगीण विकास में इस अवस्था का सदुपयोग न किया जाए तो उसकी क्षतिपूर्ति कभी नहीं हो पाती। इस अवस्था में बच्चों की देखरेख तथा शिक्षा पर ध्यान देने से ही भविष्य में देश को सुयोग्य एवं कर्मठ नागरिक मिल सकते हैं। ऐसी परिस्थितियों में पूर्व प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता स्वाभाविक है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा (बाल शिक्षा) के आधुनिक परिपेक्ष्य में गिजु भाई के शैक्षिक विचारों के विवेचन के आधार पर स्पष्ट होता है कि इन्होंने शिक्षा और बालक के जीवन की गुणात्मकता को एक–दूसरे का पर्याय माना है। उनके अनुसार वास्तविक शिक्षा वह है जिसमें बालक का सर्वांगीण विकास हो सके तथा जो बालक को चरित्रवान, परिश्रमी और स्वावलम्बी बनाए। बालक में अनुभवात्मक और अभिव्यक्तात्मक दोनों प्रकार की क्षमताओं का विकास हो। केवल परीक्षा पास कर कागजी डिग्री प्राप्त कर लेना ही पर्याप्त नहीं है। शिक्षा के द्वारा बालक को तर्क, चिन्तन, विश्लेषण आदि गुणों का विकास होना भी आवश्यक है। इस प्रकार गिजु भाई के बाल शिक्षा दर्शन में विभिन्न कौशलों का समुच्चय है।

- गिजु भाई के शिक्षा दर्शन में बालक को ईश्वर का अंश मानकर उसके स्वतन्त्र अस्तित्व पर बल दिया गया है।
- गिजु भाई की शिक्षण पद्धति स्वाभाविकता पर केन्द्रित थी न कि कृत्रिमता पर।
- उनके अनुसार भय और दण्ड के बल पर अनुशासन स्थापित नहीं किया जा सकता, अनुशासन के लिए स्वप्रेरणा एवं स्वक्रिया का होना आवश्यक है।
- गिजु भाई के शिक्षा दर्शन में भारतीय दर्शन की तीनों धारणाओं (ज्ञान, भाव और कर्म) का समावेश किया गया है तथा बालक को देवता मानकर उसका एक सक्षम सुदृढ़ व्यक्तित्व के रूप में निर्माण करने का प्रयास किया गया है।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भी स्वाभाविकता पर आधारित शिक्षण पद्धति पूर्व प्राथमिक शिक्षा में नवाचार के द्वार खोलती है। उनके द्वारा मातृभाषा के माध्यम से दी जाने वाली जीवनोपयागी शिक्षा बालक के पूर्ण विकास में सक्षम प्रतीत होती है। उनके पाठ्यक्रम में आवश्यकतानुसार बदलाव करके मातृभाषा के माध्यम से गिजु

भाई की जीवनोपयोगी शिक्षा को अपनाकर बालक का सर्वांगीण विकास कर सकते हैं तथा जो शिक्षण पद्धति आज तक केवल गुजरात प्रान्त तक ही सीमित है, वह पूरे भारत में विकसित हो सकती है।

आधुनिक युग में, जब व्यवसायिक शिक्षा एक आवश्यकता के रूप में उभरकर आयी है। ऐसे समय में, गिजु भाई द्वारा प्रदत्त जीवनोपयोगी शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। उनके द्वारा दी जाने वाली शिक्षा प्रदान करने के उपाय इतने सरल हैं कि उन्हें अपने आस–पास के वातावरण में आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। 1986 में जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनी उसका भी आधार कार्यानुभव ही रखा गया और समाजोपयोगी उत्पादक कार्य को शिक्षा में दिये जाने पर बल दिया गया इससे यह स्पष्ट होता है कि गिजु भाई को जीवनोपयोगी शिक्षा पहले से अधिक प्रासंगिक दिखाई दे रही है।

गिजु भाई सृजनात्मक अनुशासन में विश्वास करते हैं उनका विचार है बाल मन्दिर में स्वेच्छा से क्रियात्मक कार्यों को करें, जिससे उनमें उत्तरदायित्व की भावना विकसित हो और स्वतन्त्र वातावरण में आत्म नियन्त्रण और स्वानुशासन के लिए प्रेरित हो। अतः अनुशासन सम्बन्धी गिजु भाई की विचारधारा आज पूर्णतया सामयिक उपयोगी एवं प्रासंगिक है। भारतीय शैक्षिक परिपेक्ष्य, तकनीकी एवं वैज्ञानिक शिक्षा राष्ट्रीय आवश्यकता एवं समय की मांग के अनुरूप है गिजु भाई के शैक्षिक विचारों का आधार भी ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक शिक्षा पर आधारित है। वह पर्यावरण शिक्षा पर जोर देते हैं। जिसके अध्ययन से राष्ट्र को विकसित और श्रेष्ठ बनाया जा सकता है।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा में गिजु भाई के विचारों की उपयोगिताः

- बालकों में शिक्षा के प्रति अरूचि की जगह जिज्ञासा, उत्साह, निडरता और मित्रता जैसे गुणों का पोषण हो सकता है।
- स्वतन्त्र वातावरण में रहकर बालक अपनी आन्तरिक अक्षमताओं को दूर कर अपनी क्षमताओं को विकसित कर सकते हैं।
- शैक्षिक वातावरण में बालक आसानी से नाटक, गीत, नृत्य संवाद करना सीख सकते हैं।
- बालक अनेक प्रकार की व्यवसायिक शिक्षा जैसे मिट्टी का काम, चित्रकला, संगीत आदि इस स्तर पर ही सीख लेते हैं।
- शिक्षक की एक तरफा भूमिका समाप्त हो सकती है और छात्रों को स्वयं को जांचने–परखने के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। छात्र शिक्षक सम्बन्ध मित्रवत हो सकते हैं, शिक्षक बालक को क्रियाशील बना सकते हैं।
- बालकों में दण्डात्मक अनुशासन के बजाए स्वअनुशासन स्थापित हो सकता है।
- इनकी बाल शिक्षा के अन्तर्गत रोचक, मनोरंजक तथा उद्देश्यपूर्ण खेल–क्रियाओं के माध्यम से बच्चों में अच्छी आदतों एवं नैतिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है।

- इनकी बाल शिक्षा द्वारा बच्चों को विकासोन्मुख और समृद्ध वातावरण दे सकते हैं।

प्राथमिक शिक्षा में श्री गिजु भाई के विचारों की उपादेयताः

- इनकी बाल शिक्षा द्वारा बच्चों को प्राथमिक शिक्षा के लिए तैयार किया जा सकता है, क्योंकि प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश लेने वाले बच्चे शारीरिक, मानसिक और भाषायी विकास की दृष्टि से प्राथमिक शिक्षा के लिए तैयार नहीं होते।
- कई परिवारों में लड़कियों को विद्यालय जाने से रोक दिया जाता है, क्योंकि उन्हें अपने छोटे भाई–बहिनों की देखभाल करनी पड़ती है। बाल शिक्षा द्वारा शिक्षा की व्यवस्था हो जाती है और ये लड़कियां प्राथमिक विद्यालय जा सकती हैं।
- इनकी बाल शिक्षा ‘‘बालिका–शिक्षा’’ के प्रसार को बढ़ावा देकर शिक्षा के सार्वजनीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।
- जिन बच्चों को उचित पूर्व प्राथमिक शिक्षा (बाल शिक्षा) प्राप्त हो जाती है, उनके विद्यालय में नामांकन और ठहराव की सम्भावना बढ़ जाती है।
- प्रारम्भिक वर्षों में मिले उचित मार्ग–दर्शन से बच्चे के विकास व उसकी क्षमताओं को विकसित करने में सहायता मिलती है तथा प्राथमिक विद्यालय में बच्चे उचित रूप से समायोजन कर सकने में समर्थ होते हैं।
- पूर्व प्राथमिक (बाल शिक्षा) प्राप्त बच्चे दूसरे बच्चों की अपेक्षा सरलता से सीख पाते हैं। उनकी शैक्षणिक उपलब्धि बढ़ जाती है तथा फेल होने की सम्भावना न के बराबर होती है।

अभिभावकों व समुदाय के लिए श्री गिजु भाई के शैक्षिक विचारों की उपादेयताः

- इनका बाल शिक्षा कार्यक्रम माता–पिता के सर्वप्रथम शिक्षक होने के दायित्व को बल देती है।
- अभिभावकों को ऐसी जानकारी देना, जिसके द्वारा वे घर पर बालकों में वांछनीय मूल्यों, संस्कारों व शिक्षा में सहायक गतिविधियों को करने में समर्थ हो सके।
- इनका बाल शिक्षा कार्यक्रम अभिभावकों को बच्चों के हित में उचित निर्णय लेने की योग्यता के लिए प्रोत्साहित करता है।
- इनके बाल शिक्षा कार्यक्रम में अभिभावकों की सहभागिता केवल गुणात्मक सुधार लाने के लिए ही नहीं, बल्कि केन्द्र संचालन, संसाधन जुटाना, एवं बच्चों की प्रगति का मूल्यांकन करने की क्षमता के लिए भी आवश्यक है।
- बालकों की औपचारिक शिक्षा (पढ़ना, लिखना व गणित) तथा शैक्षिक भार को कम करने के लिए अभिभावक को यह समझाने में मदद करती है कि औपचारिक शिक्षा पर जोर देना इस अवस्था में बच्चों के विकास के लिए हानिकारक हो सकता है।

- इनका बाल शिक्षा कार्यक्रम बच्चों के लिए कार्य करने वाली स्वयंसेवी एवं सरकारी संस्थाओं, कार्यकर्ताओं, अभिभावकों एवं समुदाय को एकजुट होकर प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वजनिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक होता है।

अध्यापकों के लिए उपादेयताः

गिजु भाई के अध्यापक के सम्बन्ध में दिये गये विचार हर स्तर प्राथमिक, माध्यमिक उच्च, तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा के अध्यापकों के लिए उपयोगी है। अध्यापक यदि गिजु भाई के अनुरूप अपने को पुजारी एवं छात्र को देवता मान लेता है तो शिक्षा जगत की अधिकांश समस्याएं स्वतः समाप्त हो जायेगी। गुरू–शिष्य सम्बन्ध अपने आप मधुर हो जायेंगे। अब तक गठित सभी शिक्षा आयोग समितियां तथा शिक्षाविद् बाल केन्द्रित शिक्षा की बात करते आये हैं वे उसकी आवश्यकता की बात करते हैं लेकिन गिजु भाई बालक को देवता मानकर बाल केन्द्रित शिक्षा का अनुठा उदाहरण प्रस्तुत करते हैं तथा अध्यापक की सारी मुश्किल हल कर देते हैं। ऐसा कर पाना अध्यापक के लिए चुनौती जरूर है लेकिन बालक के प्रति शिक्षक का यह समर्पण शिक्षा को नई ऊँचाई प्रदान करेगा। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम कार्यक्रम 2005 में अध्यापक को अपनी पुरातन भूमिका को त्याग नई भूमिका में आने की संस्तुति की गई है। उसे इस भूमिका में ज्ञान का उपदेशक न होकर छात्र के साथ ज्ञान का खोजी बनना है उसका सहायक बनना है तथा उसे छात्र के लिए ऐसे वातावरण को बनाना जिसमें वह (छात्र) ज्ञान की रचना कर सके।

निष्कर्ष–

संक्षेप में, यह कार्यक्रम जीवनपर्यन्त सीखने के लिए उत्तम नींव प्रदान करता है। इसलिए यदि बच्चा बाद के वर्षों में अच्छे परिणाम प्रदर्शित करता है, तो शुरू में इस कार्यक्रम पर किया गया यह व्यय (खर्च) बहुत ही महत्वपूर्ण निवेश है। इस प्रकार गिजु भाई की बाल शिक्षा के विचारों में थोड़ा फेर–बदल के बाद उनके सम्पूर्ण शैक्षिक मूल्य आधुनिक भारतीय बाल शिक्षा के परिप्रेक्ष्य के लिए समसमायिक, उपयोगी एवं प्रासंगिक है, जिनमें न केवल भारतवर्ष का अपितु सम्पूर्ण विश्व का कल्याण निहित है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि गिजु भाई के शैक्षिक विचारों में बाल सम्मान का विवेचन और विश्लेषण जिस प्रभावपूर्ण और सरल शैली में हुआ है वह आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में नवीनीकरण के लिए आधार स्तम्भ है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

- बधेका गिजुभाई, दिवास्वप्न (गुजराती से अनुवाद) दीनानाथ दबे अनु0 जयपुर, गीतांजलि प्रकाशन, 2004
- बधेका गिजुभाई, ऐसे हो शिक्षक (गुजराती से अनु0), दीनानाथ दवे अनु0 जयपुरः गीतांजलि प्रकाशन, 2004
- बधेका गिजुभाई, प्राथमिक विद्यालय की शिक्षा–पद्धतियां (गुजराती से अनु0), दीनानाथ दवे अनु0 जयपुरः गीतांजलि प्रकाशन, 2005

- बधेका गिजुभाई, माता–पिता से (गुजराती से अनु0), दीनानाथ दवे अनु0 जयपुरः गीतांजलि प्रकाशन, 2004
- बधेका गिजुभाई, चलते–फिरते शिक्षा (गुजराती से अनु0), दीनानाथ दवे अनु0 जयपुरः अंकित पब्लिकेशन्स, 2001
- बधेका गिजुभाई, प्राथमिक शाला में शिक्षक (गुजराती से अनु0), दीनानाथ दवे अनु0 जयपुरः गीतांजलि प्रकाशन, 2005
- बधेका, गिजुभाई, माता–पिता की माथापच्ची (गुजराती से अनुवाद); दीनानाथ दवे, अनु0 जयपुरः गीतांजलि प्रकाशन, 2006
- बधेका, गिजुभाई, माता–पिता बनना कठिन है (गुजराती से अनुवाद); दीनानाथ दवे, अनु0 जयपुरः गीतांजलि प्रकाशन, 2003
- बधेका, गिजुभाई, शिक्षकों से (गुजराती से अनुवाद); दीनानाथ दवे, अनु0 जयपुरः गीतांजलि प्रकाशन, 2003
- बधेका, गिजुभाई, गिजुभाई की बाल कहानियां, (गुजराती से अनु0) सूरज प्रकाशन, अनु0 नई दिल्ली, 2006
- बधेका, गिजुभाई की बाल कहानियां (गुजराती से अनुवाद); दीनानाथ दवे, अनु0 जयपुरः गीतांजलि प्रकाशन, 2006